‘रामचरितमानस’ एवं ‘सप्तकाण्ड रामायण’ में रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता

शोध-प्रबंध

गौहाटी विश्वविद्यालय की

पी. एच. डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोधसारांश

2021

शोध निर्देशक

डॉ॰ दिलीप कुमार मेधी

पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

गौहाटी विश्वविद्यालय

गुवाहाटी- 14

शोधार्थी

दीपक कुमार गुप्ता

हिन्दी विभाग,

गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी

पंजीकृत क्रम संख्या- हिन्दी/01/16

RAMBHAKTI AND ITS RELEVANCE IN THE 'RAMCHARITMANAS' AND 'SAPTAKANDA RAMAYAN'

A Thesis Submitted to

Gauhati University for the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi under the Faculty of Arts

2021

RESEARCH GUIDE

DR. DILIP KUMAR MEDHI

PROF. DEPT. OF HINDI

GAUHATI UNIVERSITY

GUWAHATI

SUBMITED BY

DEEPAK KUMAR GUPTA

ENROLMENT NO. : Hindi/01/16

GAUHATI UNIVERSITY

GUWAHATI

मेरे अध्ययन का विषय सदी के दो महानतम महाकाव्यों , अवधि में रचित 'रामचरितमानस' एवं असमीया में प्रणीत 'सप्तकाण्ड रामायण' के विस्तृत विश्लेषण की ओर रहा है। 'रामचरितमानस' के रचनाकार हिन्दी साहित्य जगत के चंद्रमा कहे जाने वाले प्रख्यात संत एवं महात्मा युगपुरुष तुलसीदास हैं। तुलसीदास न केवल काव्यद्रष्टा हैं बल्कि त्रिकालदर्शी कवि की भांति ही युगद्रष्टा एवं समाज कल्याणकारक भी थे। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज की बागडोर को थामकर भक्ति के रस में डुबोकर उसे सही राह पर लाया था। 'रामचरितमानस' तुलसीदास की ही अमर कृति नहीं है बल्कि यह विश्व साहित्य की एक अनुपम निधि है जिसका प्रकाश युगों तक समाज का पथ प्रदर्शन करता रहेगा।

जहाँ एक ओर 'रामचरितमानस' ने उत्तर भारत की जनता को भक्ति का सही मार्ग दिखलाकर उनका उद्धार किया वहीं दूसरी ओर भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम में असमीया भाषा में रचित महानतम अमर कृति 'सप्तकाण्ड रामायण' भी साधारण जनता का पथ प्रदर्शन कर भक्ति भाव से उनका उद्धार करती रही है।

'सप्तकाण्ड रामायण' असमीया समाज और असमीया संस्कृति का अविभाज्य अंग बनकर रामकाव्य की अविरल कल्याणकारी भावधारा को प्रवाहित करती रही है। असमीया 'सप्तकाण्ड रामायण' मूलतः अप्रमादी कवि माधव कंदली द्वारा विरचित है जिसे माधव कंदली ने चौदहवीं शताब्दी में अपने आश्रयदाता वराह राजा महामाणिक्य के अनुरोध पर 'वाल्मीकि रामायण' के अनुवाद स्वरूप लिखा था। असमीया 'सप्तकाण्ड रामायण' में कवि ने वाल्मीकि रामायण की कथा योजना को ही बड़ी तन्मयता के साथ सुंदर ढंग से असमीया समाज और संस्कृति के अनुरूप बनाकर अनुपम सृजन किया है।

मूलतः असमीया 'सप्तकाण्ड रामायण' माधव कंदली द्वारा सात कांडों में रचित हुआ था। परंतु कालक्रम के प्रभाव में इस मूल रामायण का आदि और उत्तर कांड काल कवलित हो गया। अतः अप्रमादी कवि की इस अनुपम कृति को अमर बनाए रखने के लिए परवर्ती काल में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने उत्तर कांड तथा माधव देव ने आदि कांड रचकर इसको पूर्ण रूप प्रदान किया। असमीया रामायण अब अप्रमादी कवि माधव कंदली की भक्ति भावना, महापुरुष शंकरदेव की युग कल्याणकारी भावमयी विचारधारा तथा परमपूज्य सेवा भाव में अग्रणी महापुरुष श्री-श्री माधवदेव के काव्यशिल्प का एक सुंदर संगम है। यह अब इन तीनों महापुरुषों की भेंट बन समाज को भक्ति भाव में रमाकर उसका कल्याण करती है।

'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों ही महाकाव्य केवल एक राम चरित काव्य ही नहीं है बल्कि इसमें राम-कथा के माध्यम से तत्कालीन समाज व्यवस्था एवं सामाजिक कल्याण की संभावनाओं और मानव सभ्यता के पूर्ण उत्कर्ष पर भी प्रकाश डाला गया है। मेरे इस विषय 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता ' के अध्ययन का उद्देश्य कवि जनों के काव्य में निहित उन संवेदनाओं और मूल्यों को भी उजागर करना है जो युग के अनुरूप तथा आवश्यक हैं। इन काव्यों में निहित राम भक्ति की भावना समाज को जहाँ स्थिरता देती है, उसे एक संबल देती है कि जीवन का परम लक्ष्य एवं उद्देश्य रामभक्ति है तथा इन लक्ष्यों की प्राप्ति का मर्म भी बताती है।

मेरे इस अध्ययन का उद्देश्य केवल कवि की रामभक्ति का प्रकाश करने तक ही सीमित नहीं रहा है बल्कि यह रामभक्ति की प्रासंगिकता को भी उतना ही उजागर करती है। 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित व्यक्तित्व राम तथा इसके सभी प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व एवं विचारधारा को देखने एवं

अध्ययन करने से यह स्पष्ट पता चलता है कि इसमे निहित न्यायप्रियता , आदर्शवादी स्वभाव , मातृ तथा पितृ सेवा परायणता, पुत्र धर्म, पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति प्रेम , त्याग और समर्पण, भ्रातृ धर्म की पराकाष्ठा तथा समाज के नैतिक मूल्यों के प्रति जो आदर एवं इन महान गुणों को धारण कर समाज को सुंदर उदाहरण प्रदान करने का प्रयास अवश्य ही प्रासंगिक है । ये मूल्य परवर्ती युग ही नहीं बल्कि हर युग में सराहनीय तथा अनुकरणीय हैं । इन मूल्यों का अनुसरण यदि आज का समाज अपने प्रति करे तथा आने वाली पीढ़ी को इन नियमों एवं आदर्शों के प्रति संवेदनशील बनाए तो संसार का कल्याण संभव हो सकेगा । अतः मैंने यहाँ 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित रामभक्ति की महानता का तथा इन काव्यों में निहित प्रासंगिक आदर्शवादी मूल्यों का अध्ययन कर समाज के सामने प्रस्तुत कर समाज को एक सुंदर जीवन शैली से परिचित कराने का एक विनम्र प्रयास करना है ।

'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' में काव्यकारों ने अपनी भक्ति-भावना को ही अभिव्यक्त नहीं किया है बल्कि भक्ति के उन मार्मिक प्रसंगों का भी सरलता से सृजन किया है जो भगवान और भक्त के मध्य एक सुंदर संबंध स्थापित करती हैं । इन भावनाओं को कवियों ने केवल भक्तिमय बनाकर ही प्रस्तुत नहीं किया है बल्कि इन्होंने उन मूल्यों, सिद्धांतों तथा आदर्शों को भी प्रस्तुत किया है जो किसी भी सभ्य एवं सुशाषित समाज की नींव है । मेरे इस अध्ययन विषय के शोध का प्रधान उद्देश्य उन मूल्यों तथा आदर्शों का उदघाटन कर उन्हें शोध के माध्यम से पाठक तथा समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना है । रामभक्ति तथा इनके मूल आदर्शों की आवश्यकता हर समाज का आवश्यक अंग है । ये आदर्श स्वभावतः ही प्रासंगिक हैं और इन प्रासंगिक बातों का अध्ययन कर इन्हें प्रस्तुत कर पाना ही मेरी सार्थकता है ।

'वाल्मीकि रामायण ' ही मूल तथा राम काव्य का आधार ग्रंथ है। इसकी रचना शास्त्र प्रमाणों के अनुसार त्रेता युग में राम के आविर्भाव से पूर्व स्वयं महर्षि वाल्मीकि ने किया था। 'वाल्मीकि रामायण' की कथा और रामभक्ति को ही परवर्ती युग में लोगों ने ग्रहण किया। इसी कथा को आगे चलकर द्वापर युग और कलियुग में उपजीव्य मानकर पठन-पाठन तथा साहित्य सृजन भी किया जाने लगा। पुराणों के अलावा संहिताओं तथा उपनिषदों में भी रामकथा भरे पड़े हैं। 'अगस्त्य संहिता', 'कलि राघव संहिता', 'वृहद नारदीय संहिता' इत्यादि इसके प्रमाण हैं। इनके अतिरिक्त रामकथा के ऊपर महाकाव्य भी रचे गए हैं। जैसे- कालिदास की 'रघुवंशम' कुमारदास कृत 'जानकी हरण' आदि। इनके अतिरिक्त पाली साहित्य में भी रामकथा का वर्णन मिलता है। 'दशरथ जातकम', 'दशरथ कथानम' इत्यादि। प्राकृत साहित्य में भी रामकथा का प्रणयन हुआ था। विमल सूरी की 'पउम चरियं' इत्यादि प्रसिद्ध है। अपभ्रंश में स्वयंभु ने 'पउम चरिऊ' की रचना की थी। असमिया राम काव्य परंपरा का भी अपना विशिष्टा स्थान है। माधव कंदली कृत वाल्मीकि रामायण का अनुवाद 'असमीया रामायण', दुर्गावर कायस्थ कृत 'गीति रामायण', अनंत ठाकुर कृत 'श्रीराम कीर्तन' तथा रघुनाथ महंत कृत 'कथा रामायण' भी विशेष प्रसिद्ध है।

मध्यकालीन भक्ति साहित्य के चंद्रमा कहे जाने वाले महात्मा महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' एक महाकाव्य ही नहीं है, अपितु यह भारतीय संस्कृति और रामभक्ति की वह धरोहर है जिस पर सम्पूर्ण भारत गौरव करता है। 'रामचरितमानस' की रचना कर के युगद्रष्टा कवि तुलसीदास ने भारतीय जनमानस का उद्धार किया है। सम्पूर्ण महाकाव्य में रामभक्ति और आदर्श जीवनशैली की सुंदर छटा विद्यमान है जिसकी आभा में सम्पूर्ण मानव जाति प्रकाशमान है। वहीं दूसरी ओर 'सप्तकाण्ड रामायण' भी उत्तर भारतीय भाषा समूह का वह गौरव है जिससे असम प्रांत में रामभक्ति का श्रीगणेश हुआ था। 'सप्तकाण्ड रामायण' मूलतः असमीया भाषा में रचित वाल्मीकि रामायण का अनुवाद है जिसे कविराज शिरोमणि माधव कंदली ने बराह राजा महामाणिक्य के अनुरोध पर रचा था। काल की गति में कंदली कृत रामायण का आदि और उत्तरकाण्ड लुप्त हो गया जिसे असमीया भक्ति साहित्य के माणिक मोती और समाज सुधारक श्रीमंत शंकरदेव और श्री माधवदेव ने सम्पूर्ण करके कविराज माधव कंदली को समर्पित किया था। इन्हीं दो महान आत्माओं के कारण ही हमें आज 'सप्तकाण्ड रामायण' सम्पूर्ण रूप में पढ़ने का सौभाग्य मिल पाया है।

मेरे अध्ययन का विषय 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण ' में रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता है। इसीलिए इस सम्पूर्ण शोध-विषय में मैंने विषेश रूप से दोनों महाकाव्यों में निहित रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला है। 'रामचरितमानस' एवं 'सप्तकाण्ड रामायण' दोनों ही महाकाव्यों में जहाँ एक ओर रामभक्ति की भावमयी अभिव्यंजना विद्यमान है , वहीं दूसरी ओर आदर्श जीवन शैली और सुंदर सांस्कृतिक सदाचारी जीवन की झांकी भी प्रस्तुत है। पूरे महाकाव्य का अध्ययन करने के पश्चात मैंने विषय-वस्तु के विवेचनार्थ उसे नौ अध्यायों में विभाजित किया है।

इस शोध के प्रम्भ में मैंने कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है। यहाँ 'रामचरितमानस' के रचयिता तुलसीदास तथा 'सप्तकाण्ड रामायण' के रचयिता माधव कंदली के अतिरिक्त 'सप्तकाण्ड रामायण' के आदि और उत्तरकाण्ड का सृजन कर उसे सम्पूर्ण रूप देने वाले दो महान रचनाकर शंकरदेव तथा माधवदेव के जीवन, व्यक्तित्व और रचनाओं के बारे में भी मैंने इस अध्याय में उल्लेख किया है। तुलसीदास का व्यक्तित्व जहाँ समाज की संकीर्णताओं और कष्टपूर्ण वातावरण में पोषित हुआ वहीं उनका साहित्य समस्त शास्त्रों , पुराणों, उपनिषदों आदि महान ग्रन्थों की आभा से आभूषित होकर प्रकाशित हुआ है। 'सप्तकाण्ड रामायण' भी रामभक्ति की अभिव्यंजना की वह शीतल छाया है जो पाठकों के मन को रामभक्ति से शीतल और शांत कर के उसका कल्याण करती है। आदि कवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण ही रामभक्ति की प्रथम अभिव्यंजना है। उसी के आधार पर संसार भर में अनेकों कालों से रामकाव्य का सृजन होता आ रहा है। इस अध्ययन में मैंने प्रथम राम काव्याश्रित रचना 'रामायण' से लेकर 'महाभारत', विभिन्न उपनिषद , 'विष्णुपुराण', 'गरुड पुराण', 'शिव पुराण', 'स्कन्द पुराण' का भी उल्लेख किया है जहाँ राम कथा का प्रस्फुटन हुआ है। इसके अतिरिक्त कालिदास द्वारा विरचित 'रघुवंशम्' तथा बौद्ध-जैन साहित्य में भी राम कथा का आभास हमें देखने को मिलता है।

मध्यकाल में हिन्दी रामकाव्य परंपरा के अंतर्गत तुलसीदास , नाभादास तथा उनके पश्चात अनेकों कवियों ने रामकाव्य का सृजन किया है। असमीया रामकाव्य परंम्परा का भी उल्लेख यहाँ किया गया है जिसके अंतर्गत माधव कंदली विरचित रामायण से लेकर उत्तरकाण्ड , आदिकाण्ड तथा भकतीया रामायण और अनेकों काव्यों-नाटकों का भी उल्लेख किया है जिसमें रामकथा का उल्लेख हुआ है।

सबसे मूल अध्याय 'रामचरितमानस' में निहित रामभक्ति की व्याख्या है। वास्तविक रूप से मूल विषय का प्रारम्भ यहीं से ही होता है। यहाँ कई सारे उपविषयों के आधार पर मैंने भक्ति की व्याख्या की है। भक्ति से तात्पर्य, भक्ति के मुख्य संप्रदाय, युगधर्म और रामभक्ति आदि की व्याख्या इस अध्याय का प्रारम्भिक विषय रहा है। पौराणिक से लेकर आधुनिककालीन महान ग्रन्थों, साहित्यों, इतिहास तथा शब्दकोशों तथा महान व्यक्तियों की वाणी के आलोक में यहाँ नवधा भक्ति की व्याख्या की गयी है। 'रामचरितमानस' में स्वयं राम शबरी से नवधा भक्ति की व्याख्या करते हैं। वाल्मीकि तथा लक्ष्मण से वार्ता के समय भी नवधा भक्ति की ही आलोचना हुई है। 'रामचरितमानस' के पात्रों तथा कथाओं को अगर ध्यान से देखें तो इसका प्रत्येक पात्र और उनके हृदय में निहित भक्ति नवधा भक्ति का साक्षात उदाहरण है। नवधा भक्ति में श्रवण , कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन भक्ति इन नौ विधियों का उल्लेख होता है। 'रामचरितमानस' की कथा तथा पात्रों का व्यक्तित्व और उनके हृदय में निहित रामभक्ति नवधा भक्ति ही है। हनुमान-अंगद की दास्य भावना, सुग्रीव, विभीषण तथा गुह की सख्य भक्ति , केवट, भरत, सीता आदि का राम-पाद-पद्म सेवन , लक्ष्मण का आत्मनिवेदन भाव तथा दशरथ की स्मरण भक्ति नवधा भक्ति का ही सुंदर प्रस्फुटन है। इस अध्याय में इन सभी पात्रों के हृदयों में निहित नवधा भक्ति की ही व्याख्या की गयी है। इसके पश्चात मैंने यहाँ 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित रामभक्ति विषय पर प्रकाश डाला है। 'सप्तकाण्ड रामायण' के भी सभी पात्र अपने हृदय में नवधा भक्ति भावना को सँजोए हुए हैं। यहाँ के सभी पात्र राम के प्रति समर्पण, सेवा, भक्ति और आदर को सँजो कर रखते हैं। आदिकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड तक पात्रों में नवधा भक्ति भावना का विकास देखा जाता है। माधव देव कथा के प्रारम्भ में ही श्रवण भक्ति की महिमा का बखान करते हैं। श्रवण से ही संसार सागर से मुक्ति

संभव है और जीवों का उद्धार हो जाता है यही बात यहाँ बताते हैं। श्रवण के पश्चात राम नाम का कीर्तन करने की बात का भी यहाँ उल्लेख हुआ है। अरण्यकाण्ड में माधव कंदली राम नाम का कीर्तन कर के अपने जीवन का उद्धार करने की बात बताते हैं। राम के अनन्य मित्र गुह राम पाद-पद्म को अपने हृदय में स्मरण कर के अपना जीवन राममय बनाकर निर्वाह करते हैं। यहाँ भी भरत बड़े भ्राता राम के पद-पंकज की सेवा करते हैं। विश्वामित्र अपनी भक्ति भावना से राम की अर्चना करते हैं। गुह चांडाल यहाँ राम की वंदना करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि इस अध्ययन में राम भक्ति की नवों विधियों का प्रस्फुटन हुआ है।

इसके अतिरिक्त इस शोध का महत्वपूर्ण विषय है 'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता की विवेचना। यहाँ पर प्रासंगिकता शब्द की व्याख्या करते हुए 'रामचरितमानस' में निहित प्रासंगिक बातों पर प्रकाश डाला गया है। 'रामचरितमानस' में आए आदर्श व्यक्तित्व , नीति-नियम, परम्पराएँ आदि अपना विशेष महत्व रखती हैं। ये नीति नियम तथा परम्पराएँ किसी भी सभ्य समाज का अविभाज्य अंग ही नहीं बल्कि उसका मेरुदंड ही हैं। इन परम्पराओं की तथा उन नीति-नियम और आदर्श व्यक्तित्व की शिक्षा देने वाला साहित्य निश्चय ही प्रशंसनीय है। इस महाकाव्य में गुरु के प्रति समर्पण भाव , संतों तथा सत्संग की महिमा की व्याख्या , स्त्री धर्म तथा आदर्श व्यक्तित्व की शिक्षा , आदर्श गृहस्थ धर्म का उदाहरण , शिष्टाचारों का नियमानुसार पालन , वैदिक संस्कारों का श्रद्धा पूर्वक अनुपालन आदि विभिन्न बातों का यहाँ उल्लेख मानव समाज को केवल प्रत्यक्ष उदाहरण ही नहीं देता बल्कि प्रामाणिक शिक्षा भी देता है। 'सप्तकाण्ड रामायण' में इन सभी प्रासंगिक बातों पर विचार किया गया है। यहाँ भी वैदिक संस्कारों का सम्मानपूर्वक पालन हुआ है। ये संस्कार निश्चय ही मानव जीवन का भी संस्कार कर उसके जीवन को शुद्ध और शांत बनाते हैं। कर्मफल का परिणाम दिखलाकर यहाँ सत्कर्म करने की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। दान प्रथा तथा स्त्री धर्म की शिक्षा का यहाँ भी गुणगान हुआ है।

यहाँ 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित रामभक्ति कि तुलना तथा दोनों ही रचनाओं में निहित प्रासंगिकता की तुलना भी की गयी है। इन दोनों ही अध्यायों में मैंने दोनों ही महाकाव्यों में निहित नवधा भक्ति तथा महाकाव्य में आए नीति-नियम , आदर्श आदि विषयों पर तुलना परक अध्ययन किया है तथा दोनों ही अध्यायों में निहित रामभक्ति और उसकी प्रासंगिकता विषय पर चर्चा भी यहाँ किया गया है। यह शोध अध्ययन सम्पूर्ण रूप से मौलिक है तथा इसकी उपलब्धियां निश्चय ही दोनों महाकाव्यों के उन पक्षों को उजागर करती हैं जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' में निहित रामभक्ति और इन दोनों महाकाव्यों में निहित प्रासंगिक बातों का अध्ययन निश्चय ही मौलिक , अनुपम तथा नवीन है। दोनों ही रचनाओं 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' के रचनाकार तुलसीदास तथा माधव कंदली और आदि तथा उत्तर कांड को जोड़कर 'सप्तकाण्ड रामायण' को सम्पूर्ण करने वाले महान कथाकार तथा भक्त महापुरुष शंकरदेव तथा श्री माधवदेव ने इस महाकाव्य में रामभक्ति की बड़ी ही अद्‌भुत एवं सुंदर अभिव्यंजना की है। यह अभिव्यंजना केवल रामभक्ति तथा जीवन के आध्यात्मिक उद्धार तक ही सीमित नहीं रही है। बल्कि यह अभिव्यक्ति साधारण से लेकर विशिष्ट सभी मनुष्यों के सामाजिक , राजनैतिक , आध्यात्मिक , आर्थिक , मानसिक सभी दृष्टियों से कल्याण करती है। निश्चय ही इस महाकाव्य पर किए गए शोध का समाज पर सकारात्मक असर पड़ेगा। आगे इस शोध विषय के अतिरिक्त अध्येताओं तथा अनुसंधानकर्ताओं द्वारा इस विषय पर अनेकों शोध किए जा सकते हैं। इन दोनों महाकाव्यों 'रामचरितमानस' और 'सप्तकाण्ड रामायण' के

राजनैतिक दर्शन, सामाजिक दर्शन, विशिष्ट पात्रों के अंदर की भक्ति-भावना , नवधा भक्ति, उसकी जीवन-शैली

इस महाकाव्य का समाजशास्त्रीय चित्रण ये सभी इस महाकाव्य के शोध का उपयुक्त विषय बन सकते हैं।